संत मुक्ताबाईचे अभंग

पंढरीमाहात्म्य

१

मुक्तजीव सदा होती पै नामपाठें। तेंचि रूप ईटे देखिलें आम्हीं।१।
पुंडलिकें विट्ठल आणिला पंढरी। आणूनि लवकरी तारी जन।२।
ऐसें पुण्य केलें एका पुंडलिकेंची। निरसली जनाची भ्रमभुली।३।
मुक्ताई चिंतनें मुक्त पैं जाली। चरणीं समरसली हरिपाठें।४।

२

शून्यापरतें पाही तंव शून्य तेंही नाहीं। पाहाते पाहोनि ठायीं ठेवियलें।१।
कैसा गे माये हा तारकु दिवटा। पंढरी वैकुंठा प्रगटला।२।
न कळे याची गती आदि मध्य अंतीं। जेथें श्रुति नेति नेति प्रगटल्या।३।
मुक्ताई सप्रेम विट्ठल संभ्रम। शून्याहि शून्य समशेजबाजे।४।

३

प्रकृति निर्गुण प्रकृति सगुण। दीपें दीप पूर्ण एका तत्त्वें।१।
देखिलें गे माये पंढरिपाटणीं। पुंडलिका आंगणीं विट्ठलराज।२।
विज्ञानेंसी तेज सज्ञानेंसी निज। निर्गुणेंसी चोज केलें सयें।३।
मुक्ताई तारक सम्यक विट्ठल। निवृत्तीनें चोखाळ दाखविलें।४।

नामपर.

४

अलिप्त संसारीं हरिनामपाठें। जाईजे वैकुंठे मुक्तलग।१।
हरिविण मुक्त न करि हो सर्वदां। संसारआपदा भाव तोडी।२।
आशेच्या निराशीं अचेतना भारी। चेतविला हरि आप आपरूपें।३।
मुक्ताई जीवन्मुक्तची सर्वदां। अभिन्नव भेदा भेदियेलें।४।

५

आधीं तूं मुक्तचि होतासिरे प्राणीया। परि वासनें पापिणीया नाडिलासी।१।
आधींचें आठवी मग घेई परी। हरिनाम जिव्हारीं मंत्रसार।२।
आदि मध्य हरि ऊर्ध्व पैं वैकुंठ। जाईल वासना हरि होईल प्रगट।ध्रु.।
एकतत्त्व धरी हरिनाम गोड। येर तें काबाड विषय ओढी।
नाम में सांडी वासना पापिणी। एक नारायणीं चाड धरी।२।
मुक्ताई मुक्तलग सांडिली वासना। मुक्तामुक्ती राणा हरिपाठें।
नामाचेनि घोटें जळती पापराशी। न येती गर्भवासीं अरे जाना।३।

६

नाम मंत्रें हरि निजदासां पावे। ऐकोनी घ्यावें झडकरी।१।
सुदर्शन करीं पावें लवकरी। पांडवां साहाकारी श्रीकृष्ण रया।२।

निजानंद दावी उघडें पैं वैकुंठ। नामेंचि प्रगट आम्हांलागीं।३।
मुक्ताई जीवन्मुक्त हा संसार। हरि पारावार केला आम्हीं।४।

७

भजनभावो देहीं नित्यनाम पेठा। नामेंचि वैकुंठा गणिका गेली।१।
नाममंत्र आम्हां हरिरामकृष्ण। दिननिशीं प्रश्न मुक्तिमार्गु।२।
नामचि तारकु तरले भवसिंधु। हरिनामछंदु मंत्रसार।३।
मुक्ताई चिंतनीं हरिप्रेम पोटीं। नित्य नाम घोटी अमृत सदां।४।

८

मुक्त पैं अखंड त्यासि पैं फावलें। मुक्तचि घडलें हरिच्या पाठें।१।
रामकृष्णें मुक्त जाले पैं अनंत। तारले पतीत युगायुगीं।२।
कृष्णनामें जीव झाले सदा शिव। वैकुंठ राणिव मुक्त सदां।३।
मुक्ताई संजीवन मुक्तमुक्ति कोडें। जालें पैं निवाडें हरिरूप।४।

९

मुक्तामुक्त दोन्ही आईक तो कर्णीं। हरिनाम वर्णी सदा काळ।१।
नाहीं काळ तेथें आम्हां वेळ कैंची। हरिनामछंदाची गोडी थोरी।२।
नाना विघ्नबाधा नाईकों आम्हीं कदा। निरंतर धंदा रामकृष्ण।३।
मुक्तपणें मुक्त मुक्ताई रत। हरिनाम सेवीत सर्वकाळ।४।

१०

आदि मध्य ऊर्ध्व मुक्त भक्त हरि। सबाह्य अभ्यंतरीं हरि एकु।१।
नलगती तीर्थें हरिरूपें मुक्त। अवघेंचि सूक्त जपिनिलें।२।
ज्याचेनि नामें मुक्त पैं जडमूढ। तरले दगड समुद्रीं देखा।३।
मुक्ताई हरिनामें सर्वदां पै मुक्त। नाहीं आदि अंत उरला आम्हां।४।

संतपर.

११

आदि अंतु हरि सर्वांघटीं पूर्ण। जाणोनि संतजन प्रेमभरित।१।
रामनाम चित्तें प्रेम वोसंडत। नित्यनित्य तृप्त हरिभक्ती।२।
शांति क्षमा दया सावध पैं चित्तीं। आनंदें डुल्लती सनकादिक।३।
मुक्ताई म्हणे नाम श्रीहरीचे जोडी। नित्यता आवडी चरणसेवे।४।

१२

परब्रह्मीं चित्त निरंतर धंदा। तया नाहीं कदा गर्भवास।१।
उपजोनी जनीं धन्य ते योनी। चित्त नारायणीं मुक्तलग।२।
अव्यक्तीं पैं व्यक्ति चित्तासि अनुभव। सर्व सर्वीं देव भरला दिसे।३।
ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान उन्मनी विज्ञान। चित्त नारायण झालें त्याचें।४।
आदि अंतीं हरि सर्व त्याचा जाला। परतोनि अबोला प्रपंचेंसी।५।
मुक्ताईचें चित्त निरंतर मुक्त। हरि हेंचि संचित आम्हांघरीं।६।

१३

सर्वीं सर्व सुख अहं तेचि दुःख। मोहममता विष त्यजीयेलें।१।
साधक बाधक करूनि विवेक। मति मार्ग तर्क शोधियेला।२।
सर्वतीर्थ हरि दुभाळु धनुवो। वोळला कणवा चातकाचा।३।
सूक्ष्ममार्ग त्याचा भक्त देहीं मायेचा। आकळावयाचा सत्व धरीं।४।
वेद जंव वाणी श्रुति तुपें काहाणी। ऐको जाय कर्णीं तंव परता जाय।५।
मुक्ताई सोहंभावें भरलें दिसे देवें। मूर्तामूर्त सोहंभावे हरि घोटी।६।

१४

पूजा पूज्य वित्तें पूजक पैं चित्तें। घाली दंडवतें भाव शीळ।१।
चंपक सुमनें पूजी कातळीनें। धूप दिप मनें मानसिक।२।
भावातीत भावो बोगरी अरावो। पाहुणा पंढरीरावो हरि माझा।३।
मुक्ताई संपन्न विस्तारूनि अन्न। सेवी नारायण हरि माझा।४।

१५

अविट हे न विटे हरिचे हे गुण। सर्व सनातन ध्यातां रूपें।१।
साध्य हें साधन हरिरूपें ध्यान। रामकृष्णकीर्तन मुक्त आम्हीं।२।
असंगेंचि नटु नटलों पैं साचे। नाहीं त्या यमाचें भय आम्हां।३।
मुक्तता पूर्णता मुक्ताई साधिली। साधना दिधली चांगयासी।४।

१६

व्यक्त अव्यक्तीचे रूपस मोहाचें। एकतत्त्व दीपाचें हृदयीं नांदे।१।
चांगया फावलें फावोनी घेतलें। निवृत्तीनें दिधलें आमुच्या करीं।२।
आदि मध्य यासी सर्वत्र निवासी। एक रूपें निशी दवडितु।३।
मुक्ताई पूर्णता एकरूपें चित्ता। आदि अंतु कथा सांडियेली।४।

१७

मनें मन चोरी मनोमय धरी। कुंडली आधारी सहस्रवरी।१।
मन हें वोगरु आदि हरिहरु। करी पाहुणेरु आदिरूपा।२।
सविया विसरू घेसील पडिभरु। गुरुकृपा विरु विरे सदां।३।
मुक्ता मुक्तचित्तें गुरुमार्ग विते। पावत त्वरिते भवीं भाव।४।

१८

सर्व रूपीं निर्गुण संचलें पैं सर्वदा। आकार संपदा नाहीं तया।१।
आकारिती भक्त मायामय काम। सर्वत्र निःसीम अंतरीं आहे।२।
निवृत्तीचा उच्छेद निवृत्ति तत्त्वता। सर्वही समता सांगितली।३।
मुक्ताई अविट मुक्तपंथरत। जीवीं शिवीं अनंत तत्त्वविद।४।

१९

उर्णाचिया गळां बांधली दोरी। पाहों जाय घरीं तंव तंतु नाहीं।१।
तैसें झालें बाई जंव एकतत्त्व नाहीं। दुजी जंव साई तंव हे अंध।२।
ऐसी मी हो अंध जात होतें वायां। प्रकृति सावया पावली तेथें।३।
मुक्ताई सावध करी निवृत्तिराज। हरिप्रेमें उमज एकतत्त्वें।४।

उपदेशपर.

२०

सहस्रदळीं हरि आत्मा हा कुसरी। नांदें देहा भीतरीं अलिप्त सदां।१।
रविबिंब बिंबे घटमठीं सदा। तें नातळे पै कदा तैसे आम्हां।२।
अलिप्त श्रीहरि सेवी का झडकरी। सेवितां झडकरी हरिच होआल।३।
चंदनाच्या दृतीं वेधल्या वनस्पती। तैसें आहे संगतीं या हरिपाठें।४।
मुक्ताई चिंतित चिंतामणी चित्तीं। इच्छिले पावती भक्त सदां।५।

२१

नादाबिंदा भेटी जे वेळीं पैं जाली। ऐशी एके बोली बोलती जीव।१।
उगेंचि मोहन धरूनि प्रपंचीं। त्यासी पै यमाची नगरी आहे।२।
जीव जंतु जड त्यासी उपदेशी। त्यासी गर्भवासी घाली देवो।३।
मुक्ताई श्रीहरि उपदेशी निवृत्ति। संसार पुढती नाहीं आम्हां।४।

२२

देउळींचा देवो घरभरी भावो। कळसेवीण वावो जातु असे।१।
जाताती वाउगे नटनाट्य सोंगें। चित्तअनुरागें भजतीना।२।
असोनि न दिसे उगयाचि पिसें। घेती वायां वसे सज्जनेवीण।३।
रावोरंक कोहं न म्हणेचि सोहं। साकारलें आहं न कळे तया।४।
भ्रांतीचेनि भूली वायाचि घरकुली। माया आड ठेली अरे रया।५।
मुक्ताई परेसी दुभतें चहूंसी। सत्रावी सर्वरसीं एका देवें।६।

२३

विश्रांति मनाची निजशांती साची। मग त्या यमाची भेटी नाहीं।१।
अधिकारी मन मग सारी स्नान। रोकडेंचि साधन आलें हाता।२।
साधिलें साधन नित्य अनुष्ठान। चित्तीं नारायण मंत्र जपे।३।
मुक्ताई प्रवीण नारायण धन। नित्य मंत्रें स्नान करी वेगीं।४।

२४

मुक्तपणें सांग देवो होय देवांग। मीपणें उद्वेग नेघे रया।१।
वाउगे मीपण आथिलें प्रवीण। एक नारायण तत्त्व खरें।२।
मुक्ता मुक्ती दोन्ही करी कारे शिराणी। द्वैताची काहाणी नाहीं तुज।३।
मुक्ताई अद्वैत द्वैतीं द्वैतातीत। अवघाचि अनंत दिसे देहीं।४।

२५

अंतर बाह्य निकें सर्व इंद्रियांचे चोज। निजीं निजबीज एकतत्त्व।१।
आदि नाहीं अनादि नाहीं। तें रूप पाही अविट बाईये।२।
मुक्ताई संजीवन तत्त्वतां निर्गुण। आकार सगुण प्रपंचींचा।३।

२६

नामबळें देहीं असोनि मुक्त। शांति क्षमा चित्त हरिभजनें।१।
दया धरा चित्तीं सर्वभूतीं करुणा। निरंतर वासना हरिरूपीं।२।

माधव मुकुंद हरिनाम चित्तीं। सर्व पैं मुक्ति नामपाठें।३।
मुक्ताईचें धन हरिनामें उच्चारु। अवघाचि संसारु मुक्त केला।४।

२७

करणें जंव कांहीं करूं जाये शेवट। तंव पडे आडवाटें द्वैतभावें।१।
राहिलें करणें नचलें पैं कर्म। हरिविण देहधर्म चुकताहे।२।
मोक्षालागीं उपाय करितोसि नाना। तंव साधनीं परता पडो पाहे।३।
मुक्ताई करि हरि श्रवण पाठ। तेणें मोक्षमार्ग नीट सकळ साधे।४।

२८

मुक्तपणें ब्रीद बाधोनिचयां द्विज। नेणती ते बीज केशव हरी।१।
ज्याचेनि मुक्तता सर्वही पै मुक्त। करूनियां रत न सेविती।२।
वेदीं बोलियेले ब्रह्मार्पणभावें। सदा मुक्त व्हावें अरे जना।३।
मुक्ताई मुक्त हरिनाम सेवित। अवघेचि मुक्त सेवितां हरी।४।

२९ उजियेडु कोडें घेतलो निवाडें। आपुलिये चाडे जीवनकळा।१।
एकरूप दिसे सर्वांघटीं भासे। एक हृषिकेशें व्यापियेलें।२।
त्रिपुटि भेदुनी सर्वत्रगामिनी। एका रूपें मोहिनी तेही सदां।३।
नित्यता उन्मत्त अवघेचि भरित। एकतत्त्वें दावित सोहं भावें।४।
मुक्ताई सांगती कैसेनि गुंपती। मायादेवी समाप्ति निजतत्त्वीं।५।

३०

विस्तारूनि रूप सांगितलें तत्त्वीं। कैसेनि परतत्त्वीं वोळखी जाली।१।
सोहंभावें ठसा कोणते पैठा। उभाउभीं वाटा कैसा जातु।२।
या नाहीं सज्ञान हा अवघा ज्ञान। आपरूप धन सर्वारूपीं।३।
मुक्ताई मुक्तता सर्वपणें पुरता। मुक्ता मुक्ति अपैता निजबोधें।४।

३१

मुक्तामुक्त कोडें पाहिलें निवाडें। ब्रह्मांडाएवढें महत्तत्त्व।१।
निजतत्त्व आप अवघाचि परिपाक। एका रूपें दीपक लावियेला।२।
आदि मध्यनिज निर्गुण सहज। समाधि निजतेज आम्हां रामू।३।
मुक्ताईचें धन आत्माराम गूण। देखिलें निधान हृदय घटीं।४।

३२

निर्गुणाची सैज सगुणाची बाज। तेथें केशीराज पहुडले।१।
कैसें याचें करणें दिवसां चांदिणें। सावळें उठणें एका तत्त्वें।२।
नाहीं या ममता अवघीच समता। आदि अंतु बिंबतां नलगे वेळू।३।
मुक्ताई सधन सर्वत्र नारायण। जीव शिव संपूर्ण एकतत्त्वें।४।

३३

दिवसा शीतळ निशीयेसी बरळ। अधऊर्ध्व केवळ निजबीज।१।
या आदि नाहीं अनादिही नाहीं। कैचा मोहप्रवाहीं दिसेचिना।२।
शक्तीचे संपुष्टीं मुक्ता मुक्त घट। अवघें वैकुंठ दिसताहे।३।
मुक्ताई परिपाक अवघे रूप एक। देखिलें सम्यक सोहं भावें।४।

३४

जेथें जें पाहे तेथें तें आहे। उभारोनि बाहे वेद सांगे।१।
सोमकांतीं झरा कोठील दुसरा। तत्त्वीं तत्त्वें धरा निजदृष्टीं।२।
हेतु मातु आम्हा अवघाचि परमात्मा। सोहंभावें सोहं आत्मा सर्वीं असे।३।
मुक्तलग खुण मुक्ताई प्रमाण। देहीं देहो सौजन्य निजतेजें।४।

३५

पूर्णपणें सार अविट आचार। सारासार विचार निजतेजें।१।
निर्गुणीं आकार सर्वत्र साकार। एकरूपें विचार निजतेजें।२।
मुक्ताई चैतन्य अवघेंचि धन। आदि अंतु खुण निवृत्तीची।३।

३६

आदि मध्य अंतु न कळोनि प्रांतु। असे जो सततु निजतत्त्वें।१।
कैसेनि तत्त्वतां तत्त्व पैं अनंता। एकतत्त्वें समता आपेंआप।२।
आप जंव नाहीं पर पाहासी काई। विश्वपणें होई निजतत्त्वीं।३।
माजि मजवटा चित्त नेत तटा। परब्रह्म वैकुंठा चित्तानुसारें।४।
मुक्ताई सांगती मुक्तनामपंक्ति। हरिनामें शांति प्रपंचाचीं।५।

३७

मुक्तलग चित्तें मुक्त पैं सर्वदां। रामकृष्णगोविंदा वाचें नित्य।१।
हरिहरिछंदु तोडी भवकंदु। नित्य नामानंदु जपे रया।२।
सर्वत्र रूपडें भरलेंसे दृश्य। ज्ञाता ज्ञेय भासे हरिमाजी।३।
मुक्ताई सधन हरी रूप चित्तीं। संसारसमाप्ति हरिच्या नामें।४।

३८

चित्तासी व्यापक व्यापूनि दुरी। तेंचि माजि घरीं नांदे सदां।१।
दिसे मध्य सुख मुक्तलग हरी। शांति वसे घरीं सदोदित।२।
नाहीं या शेवट अवघाचि निघोट। गुरुतत्त्वें वाट चैतन्याची।३।
मुक्ताई संपन्न मुक्त पैं सेजुले। सर्वत्र उभविलें मुक्ति चोख।४।

३९

प्रारब्ध संचित आचरण गोमटें। निवृत्तितटाकें निघालों आम्ही।१।
मुळींचा पदार्थ मुळींच पैं गेला। परतोनि अबोला संसारासी।२।
सत्यमिथ्याभाव सत्वर फळला। हृदयीं सामावला हरिराज।३।
अव्यक्त आकार साकार हे स्फुर्ति। जीवेंशिवें प्राप्ति ऐसें केलें।४।
सकामनिष्कामवृत्तीचा निजफेर। वैकुंठाकार दाखविलें।५।
मुक्तलग मुक्त मुक्ताईचें तट। अवघेंचि वैकुंठ निघोट रया।६।

४०

शांति क्षमा वसे देहीं देव पैसे। चित्त समरसें मुक्त मेळु।१।
निर्गुणें उपरमु देव पुरुषोत्तमु। प्रकृति संगमु चेतनेचा।२।
सज्ञानीं दिवटा अज्ञानी तो पैठा। निवृत्तीच्या तटा नेतु भक्ता।३।
मुक्ताई दिवस अवघा हृषीकेश। केशवेंविण वास शून्य पैसे।४।

कूट

४१

देउळाच्या कळशीं नांदे एक ऋषी। तया घातली पुशी योगेश्वरीं।१।
दिवसा चांदिणें रात्रीं पडे उष्ण। कैसेंनी कठिण तत्त्व जालें।२।
ऋषी म्हणे चापेकळिकाळ पैं कांपे। प्रकाश पिसे मनाच्या धारसें एक होय।३।
एकट एकलें वायांचि पै गुंफलें। मुक्त पैं विद्वलें सहज असे।४।
वैकुंठ अविट असोनि प्रकट। वायांचि आडवाट मुक्ताई म्हणे।५।

४२

मुंगी उडाली आकाशीं। तिणें गिळिलें सूर्याशीं।१।
थोर नवलाव जाहला। वांझे पुत्र प्रसवला।२।
विंचु पाताळाशीं जाय। शेष माथां वंदी पाय।३।
माशी व्याली घार झाली। देखोन मुक्ताई हांसली।४।

ताटीचे अभंग (क्षेपक)

४३

योगी पावन मनाचा। साहे अपराध जनाचा।१।
विश्व रागें झालें वन्ही। संतीं सुखें व्हावें पाणी।२।
शब्दशस्त्रें झाले क्लेश। संतीं मानावा उपदेश।३।
विश्वपट ब्रह्मदोरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।४।

४४

सुखसागरीं वास झाला। उंच नीच काय त्याला।१।
अहो आपण जैसें व्हावें। देवें तैसेंचि करावें।२।
ऐसा नटनाट्य खेळ। स्थिर नाहीं एक वेळ।३।
एकापासूनि अनेक झालें। त्यासी पाहिजे सांभाळिलें।४।
शून्य साक्षित्वें समजावें। वेद ओंकाराच्या नांवें।५।
एकें उंचपण केलें। एक अभिमानें गेलें।६।
इतुकें टाकूनि शांति धरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।७।

४५

वरी भगवा झाला नामें। अंतरीं वश्य केला कामें।१।
त्याला म्हणूं नये साधु। जगीं विटंबना बाधु।२।
आपआपणा शोधूनि घ्यावें। विवेक नांदे त्याच्यासवें।३।
आशा दंभ अवघे आंवरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।४।

४६

संत तोचि जाणा जगीं। दया क्षमा ज्याचें अंगीं।१।
लोभ अहंता न ये मना। जगीं विरक्त तोचि जाणा।२।
इहपर लोकीं सुखी। शुद्धज्ञान ज्याचें मुखीं।३।

मिथ्या कल्पना मागें सारा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।४।

४७

एक आपण साधु झाले। येर कोण वायां गेले।१।
उठे विकार ब्रह्मीं मूळ। अवघें मायेचें गाबाळ।२।
माया नुरे जेव्हां। विश्व ब्रह्म होईल तेव्हां।३।
ऐसा उमज आदीं अंतीं। मग सुखी व्हावें संतीं।४।
चिंता क्रोध मागें सारा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।५।

४८

ब्रह्म जैसे तैशा परी। आम्हां वडील भूतें सारीं।१।
हात आपुला आपणा लागे। त्याचा करूं नये खेद।२।
जीभ दातांनीं चाविली। कोणें बत्तिशी तोडिली।३।
थोर सुखावलें मन। पुढें उदंड शहाणे।४।
चणे खावे लोखंडाचे। मग ब्रह्मपदीं नाचे।५।
मन मारुनी उन्मन करा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।६।

४९ सुखसागर आपण व्हावें। जग बोधें निववावें।१।
बोधा करूं नये अंतर। साधू नाहीं आपपर।२।
जीव जीवासी पैं द्यावा। मग करूं नये हेवा।३।
तरुणोपाय चित्तीं धरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।४।

५०

अहो क्रोधें यावें कोठें। अवघे आपण निघोटें।१।
ऐसें कळलें उत्तम। जन तेचि जनार्दन।२।
ब्रीद बांधिलें चरणीं। नये दावितां करणीं।३।
वेळ क्रोधाचा उगवला। अवघा योग फोल झाला।४।
ऐसी थोर दृष्टी धरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।५।

५१

सांडी कल्पना उपाधी। तीच साधुला समाधी।१।
वाद घालावा कवणाला। अवघा द्वैताचा हो घाला।२।
पुढें उमजेना काय। उडत्याचे खालीं पाय।३।
एक मन चेष्टा करी। भूतें बापुडी शेजारीं।४।
अवघीं ईश्वराची करणी। काय तेथें केलें कोणी।५।
पुन्हां शुद्ध मार्ग धरा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।६।

५२

गिरी गव्हारें कशासाठीं। रागें पुरविली पाठी।१।
ऐसा नसावा संन्यासी। परमार्थाचा जो कां द्वेषी।२।
घर बांधिलें डोंगरीं। विषया हिंडे दारोदारीं।३।
काय केला योगधर्म। नाहीं अंतरीं निष्काम।४।
गंगाजळ हृदय करा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।५।

५३

शुद्ध ज्याचा भाव झाला। दुरी नाहीं देव त्याला।१।
अवघीं साधनें हातवटीं। मोलें मिळत नाहीं हाटीं।२।
अहो आपण तैसें व्हावें। अवघें अनुमानूनि घ्यावें।३।
ऐसें केलें सद्‌गुरुनाथें। बापरखुमादेवी कांतें।४।
तेथें कोणी शिकवावे। सार साधूनियां घ्यावें।५।
लडिवाळ मुक्ताबाई। जीव मुद्दल ठायींचे ठायीं।६।
तुम्ही तरून विश्व तारा। ताटी उघडा ज्ञानेश्वरा।७।